श्रीगणेशाय नमः

अथ मुहूर्तचिन्तामणिः

हिन्दी टीकासहितः

★

शुभाशुभप्रकरणम् १

मंगलाचरणम्

गौरीश्रवःकेतकपत्रभङ्गमाकृष्य हस्तेन दधन्मुखाग्रे ।
विघ्नं मुहूर्ताकलितद्वितीयदन्तप्ररोहो हरतु द्विपास्यः ॥ १ ॥
श्रीनाथपादाम्बुजदीर्घनौकामाश्रित्य तर्तुं विबुधैरपार्यम् ।
श्रीरामदैवज्ञकवेः कवित्वसिन्धुं प्रवृत्तोऽस्मि कियद्वराकः ॥ १ ॥
निजतातपदाम्बुजाप्तबोधो मौहूर्तं वितनोमि बालतुष्ट्यै ।
विवृतिं नृगिरां महीधराख्यः क्षन्तव्यं विबुधैर्यदत्र मेऽघम् ॥ २ ॥

भाषाकार विघ्नविघातार्थं मंगलाचरणरूप निजगुरुको प्रणामपूर्वक भाषारचनाका प्रयोजन कहता है, कि सत्कवि रामदैवज्ञके कवितारूपी समुद्र जो कि विद्वानोंसे भी सहसा पार नहीं उतरा जाता अर्थात् एकाएक कविके आशयको विना कुछ आधार नहीं पाते इसका में एक छोटासा (वराक) अल्पसार (श्रीनाथ) लक्ष्मीनाथ विष्णु अथवा (श्री) शोभायुक्त (नाथ) आदिनाथ शिव, विशेषतः आनन्दानन्दनाथ आदि गुरुपंक्तित्रिकमेंसे प्रथम श्रेण्यधीश श्रीनाथ परब्रह्मरूप सच्चिदानन्दमय गुरुके चरणकमल ही एक बड़ी (नौका) नावके आश्रय पाकर उक्त कवितासमुद्र तरनेको उद्यत हुआ हूँ अपने जनकके करकमलोंके प्रसादसे पाया है मुहूर्तादिका बोध (ज्ञान) जिसने ऐसा मैं महीधरनामा (ब्राह्मण राजधानी टीहरी जिला गढ़वाल निवासी मुहूर्तग्रन्थोंसे अनभिज्ञोंके प्रसन्नतार्थ इस "मुहूर्तचिन्तामणि" नामक ग्रन्थकी सरस हिन्दीभाषाटीका करता हूँ तब प्रार्थना भी करता हूँ कि इसमें (जो कुछ मेरी दुष्कृत) अयोग्यता हो तो विद्वज्जन क्षमा करें ॥ १ ॥ ॥ २ ॥

आचार्य प्रथम मंगलाचरण इंद्रवज्रा छन्दसे करता है :-

श्रीगणेशजीने निजमाता (गौरी) पार्वतीके कानमें पहिरे हुए केतकीके (पत्र) पुष्पके एक भागको अपने शुण्डादण्डसे बाललीला अपनी माताको दिखलानेके लिये बलात्कारसे खैंच (ग्रहण) कर अपने मुखमें एक ओर भक्षण निमित्त धारण किया जितनेमें भक्षण न हो सका

Scanned with CamScanner

इतने (मुहूर्त) क्षण पर्यन्त द्विदन्तकी शोभा देखनेमें आयी क्योंकि गणेशजी एकदन्त हैं दूसरी ओर थोड़े समय केतकी पुष्पके टुकड़े रखनेसे द्विदन्त जैसे प्रतीत हुए यह अद्भुतोपमालङ्कार है और (द्विपास्य) एक बार शुण्डासे पुनः मुखसे पीनेवाले हाथीका है। मुख जिसका ऐसा गणेश विघ्नको हरण करे ॥ १ ?॥

क्रियाकलापप्रतिपत्तिहेतुं संक्षिप्तसारार्थविलासगर्भम् ।
अनन्तदैवज्ञसुतः स रामो मुहूर्तचिन्तामणिमातनोति ॥ २ ॥

क्रिया (जातकर्म) आदि समस्त कार्यसमूहकी प्रतिपत्ति (यह कार्य अमुक दिनमें शुभ अमुकमें अशुभ) का हेतु (कारणभूत) एवं संक्षेप (थोड़े) शब्दोंमें सार (निष्कर्ष) अर्थका बिलास प्रकाश है गर्भ (अन्तर) में जिसके अर्थात् मुहूर्त ग्रन्थ प्राचीन अनेक हैं, परन्तु उनमें पाठ बहुत और तिथ्यादि विचारोंके पृथक प्रकरण हैं इसमें समस्त कार्यनिर्वाह थोडे ही शब्दोंसे एक ही स्थलमें हो जाता है इसलिये दिनशुद्धि विशेषके यद्वा "मुहूर्त" दिन के पन्द्रहवें भाग (दो घडी) उपलक्षित कालके चिन्ता शुभाशुभनिरूपण विचारका मणि, जैसे हीरा आदि समस्त कांतिमानोंके आधार हैं ऐसे ही समस्त मुहूर्त (दिनशुद्धि) के आधार इस मुहूर्तचिन्तामणि नामक ग्रन्थको जगद्विख्यात अनन्तनामा दैवज्ञ (ज्योतिषी) का पुत्र रामदैवज्ञ विस्तारित अर्थात् विधिनिषेधके सन्निवेश (विधान) का निरूपण करता है ॥ २ ॥ (उ० जा०)

तिथीशाः

तिथीशा वह्निकौ गौरी गणेशोऽहिर्गुहो रविः ।
शिवो दुर्गाऽन्तकौ विश्वे हरिः कामः शिवः शशी ॥ ३ ॥

प्रथम पंचांगके शुभाशुभनिरूपणार्थ तिथियोंके स्वामी कहते हैं :– कि प्रतिपदाका स्वामी अग्नि, एवं द्वि० ब्रह्मा, तृ० पार्वती, च० गणेश, पं० सर्प, ष० कार्त्तिकेय, स० सूर्य, अ० शिव, न० दुर्गा, द० यम, ए० विश्वेदेव, द्वा,० हरि, त्रयोद० कामदेव, चतुर्द० शिव, पू० अमा० चन्द्रमा है। इनके कहनेका प्रयोजन यह है, कि तिथिका जो अधिपति उसका पूजन उसीमें होता है तथा उनके जैसे गुण एवं कर्म हैं वैसे ही प्रकारकर्तव्य कार्यका शुभाशुभ परिणाम देते हैं जैसे रत्नमाला आदिकोंके तिथिप्रकरणोक्त प्रयोजन हैं कि, प्रतिपदामें विवाह, यात्रा, व्रतबन्ध, प्रतिष्ठा, सीमन्त, चूडा, वास्तुकर्म, गृहप्रवेश आदि मंगल न करना, परन्तु यहां विशेषतः शुक्ल प्र० की है, कृष्णमें उक्त कार्योंमेंसे कुछ होते हैं उनकी स्पष्टता आगे लिखेंगे, द्वितीयामें राज-सम्बन्धी अंग वा जिह्वाके कृत्य व्रतबन्ध, प्रतिष्ठा, विवाह, यात्रा, भूषणादि कर्म शुभ होते हैं।

Scanned with CamScanner

तृतीयामें द्वितीया उक्त कर्म और गमनसम्बन्धी कृत्य, शिल्प, सीमन्त, चूडा, अन्न-प्राशन, गृहप्रवेश, भी शुभ होते हैं, रिक्ता ४ । ९ । १४ में अग्निकर्म, मारणकर्म, बन्धन, कृत्य, शस्त्र, विष, अग्निदाह, घात आदि विषयक कृत्य, शुभ और मंगलकृत्य अशुभ होते हैं । पञ्च-मीमें समस्त शुभकृत्य सिद्धि देते हैं परन्तु ऋण (कर्जा) इसमें न देना । देनेसे नाश हो जाता है । षष्ठीमें तैलाभ्यंग, पितृकर्म और दन्तकाष्ठोंके बिना सभी मंगल पौष्टिक कर्म करने तथा संग्रामोपयोगी शिल्प, वास्तु, भूषण, वस्त्र भी शुभ हैं, सप्तमीमें जो जो कृत्य द्वि०तृ०पं० प० में कहे हैं वे सिद्ध होते हैं । अष्टमीमें रणोपयोगी कर्म, वास्तुकृत्य, शिल्प, राजकृत्य, लिखनेका काम, स्त्री, रत्न, भूषणकृत्य शुभ होते हैं । दशमीमें जो जो द्वि० तृ० पं० स० में कहे हैं वे सिद्ध होते हैं । एकादशीमें व्रत उपवासादि समस्त धर्मकृत्य, देवताका उत्सव, वास्तु-कर्म, सांग्रामिक कर्म, शिल्प शुभ होते हैं । द्वादशीमें समस्त स्थावर जंगमके कर्म, पुष्टिकारक शुभकर्म सभी सिद्ध होते हैं । त्रयोदशीमें द्वि० तृ० पं० स० के उक्त कृत्य शुभदायक होते हैं । पूर्णिमामें यज्ञक्रिया, पौष्टिक, मङ्गल, संग्रामोपयोगी, वास्तुकर्म, विवाह, शिल्प, समस्तभूष-णादि सिद्ध होते हैं । अमवास्यामें पितृकर्ममात्र होते हैं कहीं शाबरोक्त उग्रकर्म भी कहे हैं । अन्य मंगल पौष्टिकोत्सवादि कृत्य न करने ॥ ३ ॥ (अनुष्टुप्)

तिथीनां संज्ञा, सिद्धियोगाश्च

नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णेतितिथ्योऽशुभमध्यशस्ताः ।
सितेऽसिते शस्तसमाधमाः स्युः सितज्ञभौमार्किगुरौ च सिद्धाः ॥४॥

तिथियोंकी तीन आवृत्तिमें नन्दादि पंच संज्ञा क्रमसे हैं, जैसे–१ । ६ । ११ । नन्दा, २ । ७ । १२ । भद्रा, ३ । ८ । १३ । जया ४ । ९ । १४ । रिक्ता, ५ । १० । १५ पूर्णा संज्ञक हैं । इनके जैसे नाम वैसे ही फल भी हैं तथा शुक्लपक्षमें पूर्व त्रिभाग (प्रतिपदासे पंचमीपर्यन्त) अशुभ अर्थात् इनमें चन्द्रमा क्षीण ही रहता है । द्वितीय त्रिभाग पंचमीसे दशमीपर्यन्त (मध्य और अंतिम त्रिभाग (दशमीसे पूर्णिमापर्यन्त) शुभ होते हैं तथा कृष्णपक्षमें पू० त्रि० (पंचमी-पर्यन्त) शुभ, म० त्रि० (पंचमीसे दशमीपर्यन्त) मध्यम और अं० त्रि० (एकादशीसे अमा० पर्यन्त) अधम होते हैं । चतुर्थपादका अर्थ यह है कि शुक्रवारके दिन नन्दा १।६।११। बुधको भद्रा ।२।७।१२। मंगलको जया ३। ८ । १३ । शनिवारको रिक्ता ४ । ९। १४ । गुरुवारके दिन पूर्णा ५ । १० । १५ । सिद्धि देनेवाली हैं । इसका प्रयोजन यह है कि " सिद्धा तिथिर्हन्ति समस्तदोषान्० " इत्यादि मासशून्य, मासदग्ध, दिनदग्ध आदि दोषोंको हटाकर कार्य सिद्ध कर देती है ॥ ४ ॥ (उपजाति)

Scanned with CamScanner

मुहूर्त चिन्तामणि

1 – शुभाशुभ प्रकरण

श्लोक क्र. - 3

तिथियों के स्वामी

क्र - तिथि - स्वामी

1) - प्रतिपदा — अग्नि

2.) - द्वितीया — ब्रह्मा

3.) - तृतीया — पार्वती (गौरी)

4.) - चतुर्थी — गणेश

5.) - पञ्चमी — सर्प

6.) - षष्ठी — कार्तिकेय

Scanned with CamScanner

क्र. - तिथि - स्वामी

7.) सप्तमी - सूर्य (रवि)

8.) अष्टमी - शिव

9.) - नवमी - दुर्गा

10.) - दशमी - यम

11.) - एकादशी - विश्वदेव

12.) - द्वादशी - हरि

13.) - त्रयोदशी - कामदेव

14.) - चतुर्दशी - शिव

15.) - पूर्णिमा/अमावस्या - चन्द्रमा (शशी)

Scanned with CamScanner

श्लोक क्र. - 4

नन्दादि संज्ञा और सिद्धयोग

तिथियों की संज्ञा

1) नन्दा — 1, 6, 11

2.) भद्रा — 2, 7, 12

3.) जया — 3, 8, 13

4.) रिक्ता — 4, 9, 14

5.) पूर्णा — 5, 10, 15

Scanned with CamScanner

सिद्ध योग

संज्ञा	तिथि	वार
नन्दा	1 - 6 - 11	शुक्रवार
भद्रा	2 - 7 - 12	बुधवार
जया	3 - 8 - 13	मंगलवार
रिक्ता	4 - 9 - 14	शनिवार
पूर्णा	5 - 10 - 15	गुरुवार

तिथियों के समक्ष जो वार बताये गये है, उन वारों में उपरोक्त तिथियों हो तो सिद्ध योग होता है। यह योग सर्वदा सिद्धि दायक होता है।

Scanned with CamScanner

तिथि शुभाशुभ बोधक-चक्र

तिथि	1, 2, 3, 4, 5	6, 7, 8, 9, 10	11, 12, 13, 14, 15
शुक्ल	अशुभ	मध्यम	शुभ
कृष्ण	शुभ	मध्यम	अशुभ

Scanned with CamScanner